Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 2 | ISSN : 2581- 6306

आतंकवाद संकल्पना और आयाम

डॉ. पूनम सिंह
नेट पी–एच.डी. राजनीतिशास्त्र

आतंकवाद आधुनिक युग में सामाजिक व राजनीतिक परिवर्तन की एक पद्धति के रूप में सम्पूर्ण विश्व के समक्ष एक अमानवीय प्रवृत्ति के रूप में उभरा है। आज यह प्रजातान्त्रिक व्यवस्था के विरूद्ध एक घोषित युद्ध एवं सम्पूर्ण विश्व व मानवता के लिए अभिशाप का रूप धारण कर चुका है। आतंकवाद आज की तारीख में एक ऐसा ब्रह्मास्त्र बन चुका है जिसकी परिधि में दुनिया की सारी अमोध शक्तियाँ भी बौनी साबित हो रही है। 9/11 (sept.2001) की घटना में केवल इमारतें ही नहीं ध्वस्त हुई (पेन्टागन और वर्ड सेन्टर) बल्कि तथाकथिक विकसित सभ्यता, लोकतंत्र और वैज्ञानिक एवं आर्थिक ताकत का समूचा मिथक ही भरभराकर गिर गया। अचानक ओसाम बिन लादेन बनाम जार्ज बुश के नाम आतंकवाद बनाम लोकतंत्र का प्रतिकात्मक युद्ध शुरू हो गया और ये दावा किया गया कि समूची दुनिया अब दो ध्रुवों में विभाजित हो गयी है एक वह जो अमेरिका के साथ है और दुनिया को लोकतंत्र एवं विकास के सस्ते पर ले जाना चाहता है और दूसरा वह जो आतंकवाद के साथ दुनिया को विध्वंस और नफरत की दुनिया में धकेल देना चहता है।

मगर ऐसी प्रतीत होता है कि यहाँ हम आतंकवाद को सीमित दायरे में पढ़ने व समझने की कोशिश कर रहे है। आतंकवाद का आयाम बहुत विकसित है इसका विस्तार केवल राजनीतिक क्षेत्र तक ही नहीं अपितु यह एक सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक समस्या है। इन विविध आयामों को समझकर आतंकवाद की समस्या का समाधान ढूँढ़ा जाना चाहिए।

आतंकवाद को ओ.पी. गाबा ने 'राजनीतिक विज्ञान कोश' में निम्नलिखित शब्दों में परिभाषित किये है :–

''राजनीतिक उद्येश्यों की पूर्ति के लिए हिंसा और आतंकवाद का सहारा लेने की प्रवृत्ति या सिद्धान्त। इस शब्द का प्रयोग प्रायः स्थापित व्यवस्था के समर्थक अपने विरोधियों की आतंक पैदा करने वाली गतिविधियों के लिए करते है, परंतु अपनी गतिविधियों को कोई आतंकवाद का नाम नहीं देता। आतंक फैलाने वाले लोग अपने आप को राष्ट्रवादी, क्रान्तिकारी या अपने दल का निष्ठावान सैनिक कहते है''।

इसमे बड़ी बिडम्बना और क्या हो सकती है कि आज तक आतंकवाद को परिभाषित नहीं किया जा सका है। एक ही घटना को कोई आतंकवादी घटना मानता है और कोई आजादी की लड़ाई, दमन के विरुद्ध संघर्ष, अस्तित्व की रक्षा के लिए की गयी कार्यवाही माना है। इस प्रकार क्रिया एक ही होती है लेकिन उसे देखने, समझने का नजरिया अलग–अलग होता है। स्पष्ट है

पहले आतंकवाद को गहराई से समझना होगा। इसके मूल कारणों का विश्लेषण करना होगा तभी हम इसे समाप्त करने के बारे में सोच सकते है। वास्तव में आतंकवाद के अनेक रूप है और उनके अनेक कारण। विद्धानों ने आतंकवाद को मुख्यतः चार भागों में विभक्त किया है–

1. व्यक्तिपरक आतंकवाद
2. क्षेत्रीय आतंकवाद
3. राष्ट्रीय आतध्ंकवाद
4. अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद

1. व्यक्तिपरक आतंकवाद– इसका आश्रय प्रायः वे ही लोग लेते है, जिनके सामने अपने अपमान का प्रतिशोध लेने, न्योयोचित माँग पूरी करने अथवा शत्रु के शक्तिशाली होने के कारण आमने–सामने संघर्ष करने की सामर्थ्य नहीं होती है। फलतः ऐसे लोग गुप्त रूप से घोषित–अघोषित आतंकवाद का सहारा लेते हैं। क्षेत्रीय या राष्ट्रीय आतंकवाद इसी का व्यापक रूप है।

2. क्षेत्रीय आतंकवाद– क्षेत्रीय आतंकवाद वह होता है जहाँ एक–एक राष्ट्र के अन्तर्भूत क्षेत्रों या समुदायों की ओर से अपने स्वतंत्र भाषायी, साम्प्रादायिक, क्षेत्रीय स्वतंत्रता की माँग को लेकर आतंकवाद का सहारा लिया जाता है। उदारणार्थ–इटली की रेड आर्मी, श्रीलंका के लिट्टे, भारत का खालिस्तान कमाण्डो फोर्स, नागा व मिजो विद्रोही, उल्फा तथा कश्मीर के जे.के.एल.एफ. आदि को लिया जा सकता है। ये आतंकवादी एक निर्धारित लक्ष्य व भावभूमि पर काम करते है। इनका उद्येश्य वहां के शासन को डगमगाना, जनता को आतंकित करके अपने प्रभाव का विस्तार करना और इस प्रकार अपनी माँग को मानने के लिए विवश करना होता है। इन आतंकवादियों के दल मे बेरोजगार युवक, जातीय व धार्मिक उन्माद से प्रभावित लोग, विदेशी प्रलोभन से आकर्षित युवक आदि शामिल होते है। इस तरह इनका संगठन विभिन्न उद्येश्यो को लेकर लड़ने वालों का बड़ा समूह बन जाता है।

3. राष्ट्रीय आतंकवाद– इसमें आतंकवादी तत्वों को विभिन्न राष्ट्रों द्वारा मदद, शरण और आतंकवादी कार्यवाहियों के लिए हथियार प्रदान किये जाते हैं।

इस श्रेणी में पाकिस्तान, चीन, संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस, इराक, ईरान आदि का नाम उल्लेखनीय है। राष्ट्रीय आतंकवाद अपनी भौगोलिक सीमाओं के अन्दर लड़ा जाता है। इसमें अपने नागरिकों में से ही आतंकवादी बनते हैं और इसमें विदेशी सहायता, धन, हथियार, गाड़ी तथा प्रशिक्षण मिलता है, जैसे–लिट्टे को उत्तर कोरिया, यूरोप तथा एशिया में रहने वाले तमिल समुदाय तथा अन्य देशों से मदद मिलती है। हमास को फिलिस्तीनियों, ईरान व सउदी अरब से सहायता मिलती है। हिजबुल्लाह को ईरान व सीरिया से न केवल वित्तीय सहायता मिलती है बल्कि इसके सदस्यों को उनसे सैन्य प्रशिक्षण, हथियार, विस्फोट सामग्री भी मिलती है।

भारत में होने वाले आतंकवादी कार्यवाहियों में प्रत्यक्षतः अथवा परोक्षतः पाकिस्तान का हाथ माना जाता रहा है।

राष्ट्रीय आतंकवाद में उन राष्ट्रों की स्वतंत्रता संग्राम की गतिविधियों को ले सकते है, जो उपनिवेशवादी और साम्राज्यवादी ताकतों के दमन चक्र में पीस रहे है। जैसे– फिलिस्तीन जनता, दक्षिणी अफ्रीका की जनता आदि। ये लोग अपने विरोधियों की दृष्टि में यह आतंकवाद है, इसलिए इन पर कानून के तहत मुकदमा चलाया जा सकता है। इस तरह सरदार भगत सिंह ब्रिटिश शासन की नजर मे आतंकवादी थे लेकिन भारतीयों की नजर में शहीद।

4. अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद– इसका अभिप्राय है विभिन्न आतंकवादी संगठनों का एक दूसरे से जुड़ जाना। आज भूमण्डलीकरण के दौर में आतंकवाद का रूप भी भूमण्डलीकरण हो रहा है, इसलिए आज आतंकवाद राष्ट्रीय सीमाओं को पर कर अतंरराष्ट्रीय स्वरूप धारण कर चुका है। अतंरराष्ट्रीय आतंकवाद का यह रूप अत्यन्त भीषण है, जो कभी–कभी सम्पूर्ण विश्व में एक साथ कार्यवाही कर सबको विस्मित कर देता है, जैसे–खाड़ी युद्ध के समय सद्दाम ने फिलिस्तीनी आह्वान किया जिसके परिणामस्वरूप कई देशों में अमेरिका दूतवास एवं अन्य महत्वपूर्ण ठिकानों के आस–पास बम विस्फोट हुए थे। पिछले 20–21 सालों में आतंकवादी घटनाएँ बेतहासा बढ़ी हैं। जिसमे आम धन–जन की हानि हुआ है। कई महत्वपूर्ण व्यक्तियों को भी हमने खो दिया है, जैसे–भूतपूर्व भारतीय प्रधानमंत्री श्रीमति इन्दिरा गांधी (1984) एवं श्री राजीव गांधी (1991) तथा श्रीलंका के राष्ट्रपति रणसिंह प्रेमदास की आतंकवादी (1995) कार्यवाही में हत्या हुई थी।

सवाल यह उठता है कि आतंकवादी समाज मे किस तरह से आतंक उत्पन्न करते है और आतंक का उद्येश्य क्या होता है। प्रायः सह माना जाता है कि आतंकवाद के मूलतः तीन उद्येश्य हैं–

1. आम आदमी का सरकार पर से विश्वास हिला देना।
2. सरकार पर प्रतिरोधात्मक कार्यवाही करने के लिए दबाव डालना।
3. लोगों को आतंकवाद के समर्थन में हथियार उठाने की प्रेरण देना।

अपनी कार्यवाही के प्रचार–प्रसार हेतु आतंकवादी मूलतः निम्न तरीको को अपनाते है–

1. संचार सेवा नष्ट करके।
2. अपहरण करके व बंधक बना के।
3. सामूहिक नरसंहार व हत्याएँ करके।
4. आत्मघाती हमले करके।
5. जैविक हथियार का प्रयोग।

अब सवाल उठता है कि आतंकवाद का कारण क्या है? वास्तव में, आतंकवाद के उद्भव में विभिन्न देशों की अपनी विशिष्ट परिस्थिति, आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक दशाएँ भी उत्तरदायी रही है। इन कारणों का बिन्दुवार विश्लेषण इस तरह किया जा सकता है–

आर्थिक असमानता, पूँजी का अन्यायपूर्ण असमान वितरण आतंकवाद के उद्भव में एक प्रमुख कारण माना जा सकता है–

एक दूसरा प्रमुख कारण समाज में अन्य मूल्यों की अपेक्षा अर्थ की प्रधानता है।

दूसरा प्रमुख कारण धार्मिक उन्माद के रूप में देखा जा सकता है। पाखंडियों के द्वारा धर्म की विकृत व्याख्या करके धर्म के नाम पर अधर्म युक्त आतंकवाद का विस्तार किया जा रहा है। ''मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना'', को भूलकर मजहबी उन्माद पैदा करके धर्म के ठेकेदार अपना उल्लू सीधा कर रहे हैं। आज दुनिया में 'इस्लामी बम' की चर्चा है। वास्तव में यह इस्लामिक बम पाक इस्लाम को नापाक करने का प्रयास है। यह सही है कि दुनिया के अधिकांश आतंकवादी संगठन इस्लाम धर्म के अनुयायी हैं लेकिन इन आतंकवादी गतिविधियों के पीछे इस्लाम नहीं अपितु ऐतिहासिक कारण ढूँढ़े जाने चाहिए। विज्ञान एवं तकनीकी के विकास के साथ इस्लाम अपनी कट्टरता के कारण कदम से कदम मिलाकर नहीं चल पाया। धर्म और जेहाद के बल पर अर्जित की गई बादशाहत नष्ट हो गई, अपने को शासक बनाए रखने की मानसिकता ने आज उन्हें आतंकवाद के रास्ते पर ढकेल दिया। आज दुनिया के बहुत कम देश जो लगभग न के

बराबर हैं, धर्म तंत्र से शासित हो रहे हैं जबकि हम अब लोकतंत्र को पूरे विश्व में स्थापित करना चाहते हैं तो धर्म के आधार पर शासन की मनसा रखने वाले निश्चित रूप से हतोत्साहित एवं कुंठित होकर विघ्न उत्पन्न करने का प्रयास कर रहे हैं, जिसे वे आतंकवाद के रूप में स्थापित करना चाहते हैं। कुल मिलाकर धार्मिक आतंकवाद, मजहबी कट्टरता से उपजा एक ऐसा अभिशाप है जो संपूर्ण समाज को तरस–नहस करना चाहता है।

तीसरा प्रमुख कारण मनोवैज्ञानिक है। युवाशाक्ति की सहज गतिशीलता, आत्मप्रदर्शन, नवीनता एवं परिवर्तन के प्रति सहज आकर्षण, बुद्धि से अधिक भावना की प्रधानता, आत्मसम्मान की रक्षा की भावना, प्रभुत्व एवं धन–प्राप्त करने की आकांक्षा, अधिकारों के प्रति अधिक सजगता, सामाजिक असमानता के प्रति क्षोभ, असफलताओं से उत्पन्न कुंठा, असुरक्षा की भावना आदि मनोवैज्ञानिक तत्त्व आतंकवाद के लिए उत्तरदायी हैं।

चौथा प्रमुख कारण, जो आतंकवाद के प्रचार–प्रसार एवं अंतरराष्ट्रीयकरण में भूमिका निभा रहा है वह है विज्ञान एवं तकनीकी का प्रयोग।

पाचवाँ प्रमुख कारण शत्रु राष्ट्रों का हस्तक्षेप है। खासकर भारत के आतंकवाद में पड़ोसी मुल्कों का प्रमुख योगदान है।

अब प्रश्न यह उठता है कि आतंकवाद, जो कि एक असामाजिक असांस्कृतिक, असंवैधानिक, अनैतिक एवं अवांछित कार्यपद्धति है, से कैसे निपटा जाए? चूँकि आजकल आतंकवाद सभ्य और सुसंस्कृत जीवन के लिए गंभीर चुनौती बन चुका है और उसने अंतरराष्ट्रीय आयाम ग्रहण कर लिया है, अतः सभ्य समाज की यह माँग है कि आतंकवाद के खूनी पंजों को मरोड़ने के लिए संगठित प्रयास किया जाय।

यदि हमें सभ्य समाज का निर्माण करना हो तो निष्पक्ष, पारदर्शी एवं लोकतांत्रिक तरीके से आतंकवाद का सामना करना होगा, इसके लिए हमारे विचार में निम्नलिखित उपाय करना चाहिए।

1– राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों के माध्यम से आवंकवाद के विरूद्ध प्रचार करना चाहिए।

2– धर्म के वास्तविक स्वरूप को समझाया जाा चाहिए तथा धार्मिक सहिष्णुता एवं सर्व धर्म सम्भाव की भावना का विकास करना सहिए।

3– आर्थिक प्रगति की दिशा समरस समाज की स्थापना की ओर होना चाहिए। आर्थिक एवं सामाजिक अन्याय को दूर करने का प्रयास करना चाहिए।

4– युवाओं के भीतर नैतिकता युक्त आत्मबल पैदा करना चाहिए। जिससे वे आतंकवाद का मुकाबला कर सकें और स्वयं उसका हिस्सा न बने।

5– आतंकवादी गतिविधियों यथा–मानव हिंसा, सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान आदि की इजाजत किसी भी कीमत पर नहीं दी जानी चाहिए। यदि कोई व्यक्ति या संगठन ऐसा करता है तो उसे दंडित किया जाना चाहिए। चाहे उसके उद्येश्य कितने ही पवित्र क्यों न हो, लोकतंत्र में अपनी बात कहने का सार्थक तरीका बैलेट है न कि बुलेट। अतः आतंकवाद गतिविधियों को हतोत्साहित किया जाना चाहिए।

6– जो युवक अपने पथ से भटक गए हैं, उन्हें वापस समाज के मुख्य धारा में लाने का प्रयास किया जाना चाहिए।

7– दुनिया के सारे राष्ट्रों को चाहिए कि अल्पसंख्यकों की पहचान सुरक्षित रखने का समुचित प्रयास करें।

8– सत्ता या राजनीति से जुड़े लोग, सुरक्षा व्यवस्था से जुड़े कर्मचारी या अधिकारी यदि आतंकवादी गतिविधियों में किसी प्रकार से लिप्त पाया जाय तो उसके विरुद्ध कठोर कार्यवाही की जानी चाहिए।

9– आतंकवादी को किसी प्रकार से सहायता देने वालों को भी कठोर सजा देनी चाहिए।

10– पकड़े गए आतंकवादियों को लंबे समय तक कैद में रखना खर्चीला एव कठिन होता है। अतः आतंकवाद से जूझ रहे देशों मे त्वरित न्यायालयों का गठन होना चाहिए ताकि लंबे कानूनी प्रक्रिया से बचा जा सके और आतंकवादियों को अतिशीघ्र दंडित किया जा सकें।

11– और अंत में शठे–शाठ्यम–समाचरेत् का आदर्श आतंकवादियों को उन्हीं की भाषा में मुँहतोड़ जवाब देने में परहेज नहीं करना चाहिए क्योंकि जो समाज को नष्ट करना चाहता है उसे समाज में, देश में और विश्व में जीवित रहने का कोई नैतिक, कानूनी और मानवीय अधिकार प्राप्त नहीं है।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि आतंकवाद रुग्ण (degemeraped) सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व्यवस्था का उत्पाद है। इसकी उत्पत्ति एक लंबे समय तक न ध्यान दिए गए परकीयकरण या एकाकीपन (Unnoticed Alienation) के परिणामस्वरूप होती है। मौजूदा स्थिति के संदर्भ में धार्मिक उन्माद, असंतोष, हताशा, व निराशा, इसके मुख्य कारण है। जब तक सामाजिक व्यवस्था रुग्ण बनी रहेगी और जब तक इसकी तह में सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक अन्याय विद्यमान रहेगा चाहे काल्पनिक हो या यथार्थ, जब तक न्याय मिलने में विलंब या कुप्रबंधन रहेगा आतंकवाद किसी न किसी रूप में विद्यमान रहेगा। अतः केवल सैनिक कार्यवाही से आतंकवाद को रोकना नामुमकिन है, इसके लिए एक अन्यायमुक्त सामाजिक व्यवस्था के निर्माण का प्रयत्न करना होगा।

संदर्भ, ग्रंथ एवं पत्रिकाएँ

1. भारतीय राजव्यवस्था एक समय विवेचना : उदयभान जैन एवं
2. भारतीय शासन एवं राजनीति : डॉ. पुखराज जैन एवं बी.एल. फाड़िया
3. सामाजिक राजनीतिक दर्शन : डॉ. ह्रदयनारायण मिश्र
4. इंटरनेशनल टेररिज्म : नंद किशोर
5. आधुनिक राजनीतिक चिंतन का इतिहास : डॉ. गंगा तिवारी
6. हाउ नाट यू कमबैट टैररिज्म : सतींद्र सिंह
7. आतंकवाद की पृष्ठभूमि और निराकरण : राममोहन
8. भारत और विश्व : डॉ. सी.पी.जी. श्रीवास्तव
9. प्रगति मंजूषा : सितंबर–अक्टूबर 1985
10. यूथ कम्पटीशन टाइम्स : अंक 8, 1985
11. सिविल सविर्सज क्रानिकल : नवंबर 1998
12. द हिंदू में प्रकाशित संपादकीय : 13 सितंबर, 2001
13. अकादमिक पत्रिका : सीएसटी सितंबर, अंक 2001
14. राष्ट्रीय सहारा : 10 जुलाई, 2005
15. इंडिया टूडे : 9 जनवरी, 2002

16. जनसत्ता : नई दिल्ली, 16 सितंबर, 2003
17. राष्ट्रीय सहारा : गोरखपुर, रविवार
18. फ्रंट लाईन : अक्टूबर 2001 अंक
19. आउटलुक : नवंबर 2001 अंक
20. योजना में प्रकाशित आवरण लेख : आतंकवाद एवं चुनौतियाँ
21. राष्ट्रीय सहारा : हस्तक्षेप, गोरखपुर, 20 मार्च, 2007